

سُورَةُ الْفَجْرِ

Surah 89 — Al-Fajr (The Dawn) · Meccan · 30 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَالْفَجْرِ

सुबह की कसम

2

وَلَيَالٍ عَشْرٍ

और दस रातों की

3

وَالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ

और जुफ्त व ताक़ की

4

وَاللَّيْلِ إِذَا يَسْرِ

और रात की जब आने लगे

5

هَلْ فِي ذَلِكَ قَسَمٌ لِّذِي حِجْرِ

अक्लमन्द के वास्ते तो ज़रूर बड़ी कसम है (कि कुफ़ार पर ज़रूर अज़ाब होगा)

6

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ

क्या तुमने देखा नहीं कि तुम्हारे आद के साथ क्या किया

7

إِرمَ ذَاتِ الْعِمَادِ

यानि इरम वाले दराज़ क़द

8

الَّتِي لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبَلَدِ

जिनका मिसल तमाम (दुनिया के) शहरों में कोई पैदा ही नहीं किया गया

9

وَتَمُودَ الَّذِينَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ

और समूद के साथ (क्या किया) जो वादी (करा) में पत्थर तराश कर घर बनाते थे

10

وَفِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَادِ

और फिरऔन के साथ (क्या किया) जो (सज़ा के लिए) मेखे रखता था

11

الَّذِينَ طَغَوْا فِي الْبَلَدِ

ये लोग मुख्तलिफ़ शहरों में सरकश हो रहे थे

12

فَأَكْثَرُوا فِيهَا الْفَسَادَ

और उनमें बहुत से फ़साद फैला रखे थे

13

فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ

तो तुम्हारे परवरदिगार ने उन पर अज़ाब का कोड़ा लगाया

14

إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ

बेशक तुम्हारा परवरदिगार ताक में है

15

فَأَمَّا الْإِنْسَانُ إِذَا مَا ابْتَلَاهُ رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ ۖ وَنَعَّمَهُ ۖ فَيَقُولُ رَبِّي أَكْرَمَنِ

लेकिन इन्सान जब उसको उसका परवरदिगार (इस तरह) आजमाता है कि उसको इज्जत व नेअमत देता है, तो कहता है कि मेरे परवरदिगार ने मुझे इज्जत दी है

16

وَأَمَّا إِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ ۖ فَيَقُولُ رَبِّي أَهْنَنِ

मगर जब उसको (इस तरह) आजमाता है कि उस पर रोज़ी को तंग कर देता है बोल उठता है कि मेरे परवरदिगार ने मुझे ज़लील किया

17

كَأَلَّا ۖ بَلْ لَا تُكْرِمُونَ الْيَتِيمَ

हरगिज़ नहीं बल्कि तुम लोग न यतीम की खातिरदारी करते हो

18

وَلَا تَحْضُونَ عَلَى طَعَامِ الْمَسْكِينِ

और न मोहताज को खाना खिलाने की तरगीब देते हो

19

وَتَأْكُلُونَ التُّرَاثَ أَكْلًا لَّمًّا ۖ

और मीरारा के माल (हलाल व हराम) को समेट कर चख जाते हो

20

وَتُحِبُّونَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ۖ

और माल को बहुत ही अज़ीज़ रखते हो

21

كَأَلَّا إِذَا دُكَّتِ الْأَرْضُ دَكًّا دَكًّا ۖ

सुन रखो कि जब ज़मीन कूट कूट कर रेज़ा रेज़ा कर दी जाएगी

22

وَجَاءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۖ

और तुम्हारे परवरदिगार का हुक्म और फ़रिश्ते कतार के कतार आ जाएँगे

23

وَجَاءَ ۚ يَوْمَئِذٍ بِجَهَنَّمَ ۖ يَوْمَئِذٍ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسُنُ وَأَنَّى لَهُ الذِّكْرَىٰ

और उस दिन जहन्नुम सामने कर दी जाएगी उस दिन इन्सान चौंकेगा मगर अब चौंकना कहाँ (फ़ायदा देगा)

24

يَقُولُ يَلِيْتَنِي قَدَمْتُ لِحَيَاتِي

(उस वक्त) कहेगा कि काश मैंने अपनी (इस) ज़िन्दगी के वास्ते कुछ पहले भेजा होता

25

فَيَوْمَئِذٍ لَا يُعَذِّبُ عَذَابُهُ أَحَدٌ

तो उस दिन खुदा ऐसा अज़ाब करेगा कि किसी ने वैसा अज़ाब न किया होगा

26

وَلَا يُوثِقُ وَثَاقُهُ أَحَدٌ

और न कोई उसके जकड़ने की तरह जकड़ेगा

27

يَأْتِيهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ

(और कुछ लोगों से कहेगा) ऐ इत्मेनान पाने वाली जान

28

أَرْجِعِي إِلَىٰ رَبِّكَ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً

अपने परवरदिगार की तरफ़ चल तू उससे खुश वह तुझ से राज़ी

29

فَأَدْخُلِي فِي عِبْدِي

तो मेरे (ख़ास) बन्दों में शामिल हो जा

30

وَأَدْخُلِي جَنَّتِي

और मेरे बेहिश्त में दाख़िल हो जा